E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

'वाक्' देवता का परिचय

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

ऋग्वेद के दशम मण्डल में वाक् देवी से सम्बद्ध मात्र दो सूक्त उपलब्ध होते हैं। निघण्टु में वाक् अन्तरिक्ष स्थानीय देवों में परिगणित हुई है। नैरुक्त प्रस्थान में वाक् के मूर्तीकरण का मूल माध्यमिका वाणी में स्थिर किया गया है। सर्वानुक्रमणी के अनुसार अम्भृण ऋषि वाक् के पिता हैं, किन्तु अन्यत्र कहीं इसका प्रमाण नहीं मिलता। शतपथ ब्राह्मण में अन्धकार को दूर भगाने वाले अत्रि नामक पुरोहित को वाक् का पुत्र कहा गया है। ऐतरेय ब्राह्मण में वाक् को सरस्वती देवी से अभिन्न कहा गया है। निघण्टु में वाक् और अदिति को एक माना गया है। दशम मण्डल के ७१वें सूक्त में वाक् महान् शक्ति के रूप में वर्णित की गई है। वाक् देवी ब्रह्म की उर्वरा शक्ति के रूप में चित्रित है। वह सकल देवताओं को प्रेरणा प्रदान करती है। देवता अपने कर्तव्य का पालन इसी की सहायता से करते हैं। वाक् जिस पर प्रसन्न होती है उसे वीर, स्तोता और मेधावी बना देती है।

ऋग्वेद के आध्यात्मिक सूक्तों में वाक्-सूक्त का स्थान महत्त्वपूर्ण है। इस सूक्त का देवता और ऋषि दोनों वाक् ही है। वाक् को ब्रह्म की शब्दात्मका शक्ति के रूप में चित्रित किया गया है। आठ मन्त्रों के इस सूक्त में शब्दब्रह्म को व्यक्त करने वाली वाक् की विभूतियों का उल्लेख ऋषि ने वाक् के मुख सि ही कराया है। सूक्त में प्रयुक्त 'ब्रह्म' पद वाक् के लिये ही है। शब्द को परम ब्रह्म का स्वरूप माना गया है। नामरूपात्मक जगत् की सृष्टि शब्दब्रह्म से ही होती है। बिना वाक् के इनका अस्तित्व नहीं।

यज्ञों में वाक् से ही ऋत्विज् मन्त्रों का उच्चारण करते हैं और धन प्राप्त करते हैं, इसीलिये वाक् को धन प्राप्त कराने वाली कहा गया है। अगर ऋत्विज् के पास वाक् नहीं तो उसे दक्षिणा के द्वारा धन की प्राप्ति नहीं हो सकती। इस प्रकार वाक् को 'संगमनी वसूनाम्' कहा गया है। वह सबकी ईश्वरी है।

वाक् के द्वारा ही किसी वस्तु का नाम जाना जा सकता है। इस जगत् में कोई ऐसी वस्तु नहीं जिसको बिना वाक् के जाना जाय। अनेक स्थानों में सब पदार्थों के भीतर वाक् का निवास है। वाक् के द्वारा ही प्राणीमात्र का व्यवहार होता है। जिस वस्तु के साथ वाक् का सम्बन्ध नहीं उसकी सत्ता नहीं। जो कुछ मनुष्य बोलता है वह वाक् के द्वारा ही। वाक् आत्मा की प्रेरणा शक्ति है। वही प्राणियों में प्रेरणामूर्ति बनकर उन-उन भावों की सृष्टि करती है। उसी की प्रेरणा से व्यक्ति शक्तिशाली बनता है, सृष्टि करने वाला बनता है, यज्ञ का ऋत्विज् बनता है, ऋषि बनता है तथा सुन्दर प्रज्ञावाला बनता है। वाक् की उत्पत्ति कहाँ से होती है तथा उससे किस-किस की उत्पत्ति हुई उसका उल्लेख सातवें मन्त्र में कवि ने किया है। वाक् को इस मन्त्र में परमात्मशक्ति के रूप में चित्रित किया गया है। परम ब्रह्म परमात्मा ही उस शक्ति का उत्पत्ति-स्थल है। उसी कारण-ब्रह्म से उत्पन्न होकर शक्तिरूपा वाक् आकाश का निर्माण करती है। आकाश जिसको शक्तिरूपा वाणी उत्पन्न करती है वह परमात्मा के ही अन्तः में है। आकाशादि पाँच महाभूतों की सृष्टि करने के बाद वाक् शक्ति ने सर्व लोक तथा सभी पदार्थों के भीतर प्रवेश किया। शंकर के मायावाद का बीज इस मन्त्र में देखा जा सकता है। वेदान्तदर्शन में भी माया को परमात्मा की शक्ति बताया गया है। उसी शक्ति से विश्व की सृष्टि होती है। परमात्मा की उसी शक्ति से सर्व-प्रथम आकाश तत्त्व उत्पन्न होता है, फिर आकाश से वायु, उससे अग्नि, तदनन्तर अग्नि से जल और जल से पृथिवी तथा पृथिवी से अन्य प्राणी आदि उत्पन्न होते हैं। शक्ति सबको उत्पन्न कर स्वयं उनमें प्रविष्ट हो गई। इस प्रकार विश्व की ऐसी कोई भी वस्तु नहीं जिसमें शक्ति न हो। अन्तिम मंत्र में शक्तिरूपा वाक् की महिमा का उल्लेख किया गया है। वाक् के मुख से कवि ने कहलवाया है-

अहमेव वात इव प्रवाम्यारभमाणा भुवनानि विश्वा।

परो दिवा पर एना पृथिव्यैतावती महिना सं बभूव ।।

अर्थात् सम्पूर्ण प्राणियों को उत्पन्न करती हुई मैं वायु के समान स्वयं ही विचरण करती हूँ। द्युलोक तथा पृथिवीलोक सभी से परे हूँ। अपनी इस महिमा से सबको व्याप्त किये हुई हूँ (१०.१२५.८)। वाक् का स्वरूप– वाक् सम्पूर्ण जगत् की स्वामिनी है। ब्रह्म से साक्षात्कारपूर्वक तादात्म्य स्थापित कर लेने के कारण वह ब्रह्मस्वरूपा है। वाक् ने पृथिवीलोक तथा द्युलोक को आच्छादित कर रखा है।

सर्वदेशरूपकता- इस सूक्त में वाक् को ही सत्ता के रूप में स्वीकार किया गया है। अन्य देवी-देवता भी वाक् के ही रूप हैं। वाक् ही रुद्रों और वसुओं के रूप में विचरण करती है तथा वही आदित्यों और विश्वदेवों के रूप में भी विचरणशील है। मित्र, वरुण, इन्द्र, अग्नि और अश्विन् देवताओं को वाक् ही धारण करती है। शत्रुसंहारक सोम, त्वष्टा, पूषा और भग भी उसी के स्वरूप हैं। इतना ही नहीं, सभी यज्ञीय देवताओं में वह सर्व प्रधान है।

वाक् के कार्य– वाक् को लोकोपकारिणी देवी के रूप में चित्रित किया गया है। वाक् सोमाभिषव करने वाले देवताओं को, हवि प्रदान करने वाले यजमान को धन सम्पत्ति प्रदान करती हैं तथा उसकी रक्षा भी करती हैं। ब्रह्मद्वेषी समाजोत्पीड़कों के विनाश के लिए रुद्र के धनुष को तानने वाली वाक् देवी लोक-हितार्थ अनेक अशुभ शक्तियों से युद्ध करती है। वाक् जिसे चाहती है उसे बलशाली, ब्रह्मनिष्ठ, ऋषि एवं सुन्दर बुद्धियुक्त बना देती हैं। वाक् वायु के समान स्वच्छन्द रूप में प्रवर्तित होती हैं।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि वाक् ही पृथ्वी एवं द्युलोक को उत्पन्न करने वाली हैं। वाक् ही सम्पूर्ण लोकों में व्याप्त भी है। वाक् का स्वरूप तो पृथ्वी एवं द्युलोक से भी परे है। सायणादि वैदिक व्याख्याकार इस वाक् को ब्रह्म-साक्षात्कार कर लेने वाली, अम्भृण की पुत्री वाक् नाम्नी ऋषिका द्वारा की गयी अपनी ही स्तुति स्वीकार करते हैं। इस प्रकार यह निश्चित ही ब्रह्म की शब्दात्मिका शक्ति है।

इस सूक्त में केवल आठ मन्त्र हैं, जिनमें शब्दब्रह्म की गरिमा की व्यंजक वाक् की विभूतियों का वर्णन स्वयं वाक् के मुख से ही कराया गया है। वह जीवन-प्रदायिका और नियन्त्रिका दोनों ही है। समस्त इन्द्रियाँ इसके द्वारा नियन्त्रित हैं। वह सब पदार्थों में अनुस्यूत है। वाक् सर्वव्यापक है। परोक्षरूप से वह सृष्टि की जीवनदात्री है। 'राष्ट्री' उसका अन्य विशेषण है। अपने तेज से वह अपने उपासक को ऋषि, ब्राह्मण अथवा विद्वान् बना देती है। वह मानवों को धन एवं रक्षा का दान देती है। वह विश्व के समस्त पदार्थों की निर्मात्री है।